# श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

# શ્રી કૃષ્ણ પ્રણામી ધર્મ પત્રિકા

जन्म दिनकी शुभ घडीपर परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीकी भाव मुद्रा


जनवरी २०१०

वर्ष ८२ श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर अंक १

www.krishnapranami.org

परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके प्राकट्योत्सव ०१/०१/२०१०
के दिन आयोजित विभिन्न कार्यक्रमोंकी झलक

# श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

वि.सं : २०६६ निजानन्दाब्द : ४२८ बुद्धजी शाके : ३३३

वर्ष : ८२ जनवरी २०१० अंक : १

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामित्व } जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

मुद्रण एवं प्रकाशन स्थल } श्री ५ नवतनपुरी धाम, खीजड़ा मन्दिर
जामनगर - ३६१ ००१ ( गुजरात ) भारत

सम्पादक मण्डल : शास्त्री श्री लक्ष्मण चैतन्य
: श्री कनकराय व्यास

वार्षिक शुल्क रु. १००/- | १५ वर्षीय शुल्क रु. १०००/-

पता : श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका, श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर ३६१ ००१
फोन : ( ०२८८ ) २६७ २८२९ फेक्स ( ०२८८ ) २५५ १३५३
E-mail : navtan@sancharnet.in, navtanpuri@gmail.com
website : www.krishnapranami.org/www.krishnadham.org

## मकर संक्रान्ति

मकर संक्रान्तिसे उत्तरायण आरंभ होता है। माघ महीनामें तीर्थोंमें रहकर पूजा, पाठ, भजन तथा चिन्तन करनेमें बड़ा पुण्य माना गया है। हम सभी सभी भी हम इन दिनों अधिक-से-अधिक निजनामका जप, मन्दिरमें परिक्रमा भजन-कीर्तनके साथ साथ श्री राजजीका ध्यान करना चाहिए।

## नूतन वर्षकी शुभकामनायें

वर्ष २०१० आप सभीके लिए सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य प्रदायक बने तथा आप धर्ममें, व्यवसायमें एवं व्यवहारमें सर्व प्रकारेण प्रगति करें ऐसी शुभकामना करते हैं

# ए बानी चित दे सुनियो साथ

**पूज्य पाद् जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज**

महामति श्री प्राणनाथजीके समग्र उपदेशके नवनीत स्वरूप श्री तारतम सागर ग्रन्थ ब्रह्मज्ञान, ब्रह्मवाणी, ब्रह्मविद्या, राजविद्याके रूपमें प्रसिद्ध है । यह आत्मज्ञान एवं ब्रह्मज्ञानका महासागर है जिसमें विश्वमें प्रचलित भिन्न-भिन्न धार्मिक मत-मतान्तर, मान्यतायें, विचार एवं सिद्धान्त पृथक्-पृथक् अथवा मिश्रित रूपमें समाहित हैं । इस विशालकाय ग्रन्थमें धर्मके सिद्धान्त, दर्शन, साधना पद्धति एवं मान्यताओंके साथ साथ परमात्माका धाम स्वरूप नाम एवं लीलाओंका विशद वर्णन है । विभिन्न मत-मतान्तर एवं धर्ममें प्रचलित बाह्य आडम्बरसे मुक्त होकर धर्मके शुद्ध स्वरूपके परिपालनकी प्रक्रिया तथा एक उदात्त सुशिक्षित एवं स्वस्थ समाजकी रचनाकी बात इसमें कही गई है । प्रत्येक सुन्दरसाथके लिए अपने मूल स्वरूप परआत्मा मूल घर परमधाम एवं अपने स्वामी पूर्णब्रह्म परमात्माकी पहचानके लिए मार्गदर्शिका होनेसे इस महाग्रन्थको पूर्णब्रह्म परमात्माकी वाङ्मयमूर्तिके रूपमें मन्दिरमें पधराकर इसका पूजन, पठन तथा पारायण किया जाता है ।

इस ब्रह्मवाणीके अवतरणके सन्दर्भमें भी ज्ञातव्य है कि यह पूर्णब्रह्म परमात्मा अनादि अक्षरातीत श्री कृष्णजी श्री राजजीके आवेश शक्तिके द्वारा अवतरित हुई है । जब आवेश शक्ति शरीर पर सञ्चारित होती है उस समय देह या लोकका भान नहीं होता है । जिस प्रकार इन्टरनेट पर सम्पर्क स्थापित(Internet conneted) होनेपर अनेक कार्य online होते हैं उसी प्रकार श्री राजजीका आवेशबल संचारित होने पर महामति श्री प्राणनाथजीके मुखारविन्दसे यह ब्रह्मवाणी अवतरित हुई है । आजकी Net की भाषामें कहें तो यह कह सकते हैं कि महामति जब online होते थे तब उन्हें परमधाम दिखता था, श्री राजजीके दर्शन होते थे, श्री राजजीका मार्ग दर्शन प्राप्त होता था और देश काल एवं परिस्थितिके

अनुसार उनके मुखारविन्दसे ब्रह्मज्ञानका अवतरण होता था जिसे समीपस्थ सुन्दरसाथ लिपिबद्ध करते थे । कुछ प्रसंग ऐसे भी बने हैं जब वे online हुए हैं उस समय उन्हें देहका भान भी रहता था और वे स्वयं इस ब्रह्म ज्ञानको लिखा भी करते थे । किन्तु यह सुनिश्चित है कि यह ज्ञान online होने पर ही अवतरित हुआ है । इसीलिए इसे ब्रह्मवाणी कहा गया है । यह किसी कविकी रचना (कविता) जैसी नहीं है । यथा,

**ए किव कर जिन जानो मन, श्री धनीजी ल्याए धामसे वचन ।**
**सो केहेती हूं प्रकट कर, पट टालूं आडा अन्तर ॥**

**( प्रकाश हि. ३७/४,५ )**

यह चौपाई स्पष्ट करती है कि स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजीने महामति श्री प्राणनाथजीके द्वारा यह ज्ञान अवतरित किया है ।

सामान्यतया काव्य रचनामें रसके साथ साथ गुण, दोष, छन्द, अलंकार आदिका विशेष ध्यान रखना पड़ता है । ब्रह्म चिन्तन, ब्रह्मधाम चिन्तन एवं ब्रह्मानन्द रसकी अनुभूतिमें बाह्य गुणदोषोंका विचार महत्त्व नहीं रखता है । इसीलिए श्री तारतम सागरमें काव्य लक्षणोंका विशेष महत्त्व नहीं है । यह तो स्वयं परमात्माकी शक्तिके द्वारा प्रकट होनेसे सर्वथा अतुलनीय एवं अनुपमेय है ।

कहा जाता है कि परमात्मा स्वयं प्रकट होकर अपना परिचय देता है । इस ब्रह्मज्ञानके विषयमें भी यह सुनिश्चित है कि स्वयं परमात्माने अपनी शक्तिके द्वारा अपना परिचय दिया है । अन्यथा पूर्णब्रह्म परमात्माका नाम, स्वरूप, लीला एवं धामके विषयमें इतना विशद, स्पष्ट एवं तारतम्य पूर्वक वर्णन विश्वके किसी भी धर्मग्रन्थमें उपलब्ध नहीं हैं । सृष्टिके आदि कालसे ही ऐसे ब्रह्मज्ञानके अवतरणकी प्रतीक्षा की जा रही थी । महामति स्वयं यह स्पष्ट करते हैं,

**निजनाम सोई जाहेर हुआ, जाकी सब दुनी राह देखत ।**
**मुक्ति देसी ब्रह्माण्डको, आए ब्रह्म आतमा सत ॥**

**( किरन्तन ७६/१ )**

ब्रह्मधामकी आत्माओंके अवतरणके साथ साथ ब्रह्मवाणीका भी अवतरण हुआ है। यह ब्रह्मवाणी ब्रह्मात्माओंको जागृत कर उन्हें परमधामके अखण्ड सुखोंका अनुभव करवाती है। साथमें अन्य जीवोंको भी अखण्ड मुक्तिके अधिकारी बनाती है। ब्रह्मानन्द रसकी अनुभूतिके लिए अनेक साधकोंने कठोर साधनायें की है तथापि उन्हें यह अवसर प्राप्त नहीं हुआ। आज हमें यह अवसर अनायास प्राप्त हुआ है। इस अवसरकी प्रतीक्षा करते हुए साधना करनेवालोंमेंसे कुछ महानुभावोंका नामोल्लेख इस प्रकार है,

**पेहलाद जुधिष्ठिर वसुदेव, बलि रुकमानंद हरिचंद ।**
**सगाल दधीच, मोरध्वज, कसनी कर छूटे या फन्द ॥**

**सतवादी नाम्र केते लेऊं, कै हुए तरन तारन ।**
**सत न छोड्या कई दुःख सहे, सो या दिनके कारन ॥**

**( किरन्तन ५५/१५,१६ )**

यह ब्रह्मवाणी वह महान ज्ञान राशि है जिसकी प्राप्तिके लिए और भी अनेक साधकोंने कठोर साधनायें कही हैं। इस सन्दर्भमें महामति कहते हैं,

**या बानीके कारने, कै करें तपसन ।**
**या बानीके कारने, कै पीवें अगिन ॥**

**या बानीके कारने, कै दमें देह ।**
**या बानीके कारने, कै करें कष्ट सनेह ॥**

**या बानीके कारने, कै गलें हेम ।**
**या बानीके कारने, कैं लेवें अनसन नेम ॥**

**या बानीके कारने, कै भैरव झंपावे ।**
**या बानीके कारने, तिलतिल देह कटावें ॥**

**या बानीके कारने, कै सन्धान सारे ।**
**या बानीके कारने, कै देह जारे ॥**

**या बानीके कारने, करे कै विध ताव ।**
**सो मुखथें केते कहूँ, हुए जो बिना हिसाब ॥**

**( प्र.हि. ३१/९५-१०० )**

सुन्दरसाथजी ! ऐसी ब्रह्मवाणी हमारे समक्ष है जिसका पान कर हमें अपनी आत्माको जागृत करना है । यदि इस पर ध्यानपूर्वक विचार करेंगे तो हमारी आत्मा अवश्य जागृत होगी और हम भी online होकर परमधाम एवं पूर्णब्रह्म परमात्माके साक्षात् दर्शन कर पायेंगे । इसीलिए महामति हमें इस ब्रह्मज्ञान पर ध्यानपूर्वक विचार करनेके लिए वारम्वार प्रेरणा देते हैं । यथा,

**ए बानी नीके विचारियों, अन्तर माहें बाहेर ।**
**तुमें जगाऊं कर जागनी, देखाय देऊं जाहेर ॥**

**( क. हि. २०/५ )**

यह चौपाई स्पष्ट करती है कि हमें बाहर एवं भितर दोनों ओरसे विचार करना होगा । बाह्य दृष्टिसे तो सर्वदा देखते ही हैं किन्तु अन्तर्दृष्टिको खोलकर देखने लगेंगे तब इसके द्वारा पूर्णब्रह्म परमात्माका स्वरूप दिखने लगेगा ।

विभिन्न साधनाओंसे प्रतिभा तीक्ष्ण बन जाती है किन्तु विवेकके उदय होनेके लिए तो अज्ञान की निवृत्ति ही आवश्यक है । ब्रह्मज्ञान प्राप्त होने पर ही अज्ञानकी निवृत्ति होगी । तभी विवेकका उदय होगा और हम उससे स्वयं एवं परमात्माके स्वरूपको जान पायेंगे । स्वयंको जानना ही आत्माजागृति है । स्वयंको जानने पर ही परमात्माकी पहिचान होगी ।

आज यह ब्रह्मवाणी हमारे समक्ष गर्जना कर रही है । हम खोजी बन कर इस पर मनन करने लगेंगे तो हमें अज्ञानसे निवृत्ति मिलेगी और हमारी चित्तवृत्ति परब्रह्म परमात्माकी दिशामें प्रवृत्त होगी । अन्यथा मूढोंकी भाँति लापरवाही करते रहेंगे तो भवसागरके प्रवाहमें बह जायेंगे । भवसागरके प्रवाहमें बह रहे हमलोगोंकी बाँह पकड़ कर महामति हमें परमधामके मार्गकी और ले जाते हुए कहते हैं,

**ए बानी गरजत मांझ संसार , खोजी खोज मिटावे अन्धार ।**
**मूढमति न जाने विचार, महामति कहे पुकार पुकार ।।**

**( किरन्तन ३/९ )**

हम इस पर विचार करेंगे, इसके एक एक शब्द पर मनन करेंगे तो हमें एक एक रहस्य स्पष्ट होते जायेंगे और हम अध्यात्मकी उचाई तय करते हुए परमात्मा तक पहुँचेंगे । अन्यथा कीट पतंगोंकी भाँति हम भी जन्मे और मरे इतना ही होगा ।

कोई भी व्यक्ति कोई कार्य आरम्भ करता है तो उसमें सफलता प्राप्त करनेके लिए निरन्तर लगा रहता है । जब सफलता प्राप्त होती है तभी उसे सन्तोषका अनुभव हागा । ऐसे ही यात्री अपनी यात्रा सकुशल पूर्ण करने पर ही सन्तोषका अनुभव करता है । इसी प्रकार हम भी संसारकी यात्रामें हैं । यह जीवन ही एक यात्रा है । इसे कुशलता पूर्वक सम्पन्न करना है और अपने जीवनको सफल बनाना है । हमारी जीवन यात्रा परमात्मा तक पहुँचनेके लिए है । इसी जीवनमें हमें परमात्माका अनुभव करना है । जब तक हमें परमात्माकी अनुभूति नहीं होगी तब तक हमारी यात्रा अधुरी मानी जायेगी । वैसे ही जीवन लीला पूर्ण हो जाएगी तो ऐसे जीवनको सफल नहीं अपितु निष्फल माना जाएगा । इसलिए हम इसी जीवनमें स्वयंको पहचान कर परमात्माको पहचाननेके लिए प्रयत्न करें । इसमें सफलता प्राप्त होनेपर ही हमारी यात्रा सफल मानी जाएगी । हमें अपनी यात्राको निष्फल नहीं बनाना है ।

यह ब्रह्मज्ञान, ब्रह्मवाणी हमें अपनी यात्राको सफल बनानेके लिए भेजी गई है । इसलिए हम इस पर मनन करें चिन्तन करें एवं इसके आधारपर चलनेके लिए कटिबद्ध बनें । महामतिके द्वारा यह ब्रह्मवाणी इसीलिए अवतरित हुई है और वे हमें इस पर मनन–चिन्तन करनेके लिए वारम्वार प्रेरणा देरहे हैं

# श्री कृष्ण त्रिधा लीला

**ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धर्मदासजी महाराज**

शुद्ध साकार स्वलीलाद्वैत अखण्ड अपरिच्छिन्न घट-घट व्यापी सर्वान्तर्यामी नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त एवं सत्-चित् आनन्दसे पूर्ण परब्रह्म पुरुषोत्तम श्री कृष्ण परमात्म स्वरूपके ज्ञानके सम्बन्धमें जहां स्वयं श्रुति कहती है कि, **यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह** अर्थात् जिस दिव्य परमात्म स्वरूपको प्राप्त न करनेके कारण मन और वाणी निराश होकर लौट आते हैं, उस अप्रतिम त्रिभंगी मूर्ति श्याम सुन्दरकी अत्यन्त रहस्य पूर्ण लीलाका विवेचन करना यथार्थमें **'उद्वाहुरिव वामन'** की तरह ही उपहास जन्य है । तथापि भक्तचित्तानुरोधेन उस लीलामय पुरुषोत्तमकी पवित्र त्रिधा लीलाका यत्किञ्चित वर्णन करना ही श्रेय समझकर शास्त्रों एवं गुरुवचनोंके अनुसार उन लीलाओंका संक्षिप्त उल्लेख करनेका लघु प्रयास करते हैं ।

पूर्ण पुरुषोत्तम आनन्द कन्द श्री कृष्ण चन्द्रकी लीला इतनी रहस्यमयी है कि उसका पार पाना अत्यन्त कठिन है । श्री कृष्ण चरित्र पर अनन्त लेख प्रकाशित हो चुके, असंख्य ग्रन्थ लिखे जा चुके, फिर भी उस लीलाधरकी गुह्यतम लीलाओंके पूर्णतम रहस्यको स्पष्ट करनेमें सभीने ही असमर्थता प्रगट की है और वास्तवमें है भी ऐसा ही । कृष्ण चरित्र सागरमें जितना आगे बढ़ो वह उतना ही गहरा और विशाल होता जाता है । फिर भी उनकी अनन्त लीलाओंका जितना भी स्मरण किया जाय, वह उतना ही अधिक लाभप्रद होता है । इसलिए इसी हेतुको लक्ष्यमें लेकर आज श्री कृष्णकी त्रिधा लीलाके सम्बन्धमें यहाँ चर्चा करेंगे ।

श्री कृष्ण त्रिधा लीला अर्थात् क्षर, अक्षर एवं अक्षरातीतकी लीला । इन तीन लीलाओंको ही शास्त्रोंमें त्रिधा लीला कहा है । संसारमें जब-जब जिस शक्ति, कला एवं अंश एवं अंशाशकी जरुरत होती है तब तब

परमात्माकी वही शक्ति जगतमें प्रकट होती है ।

**कृष्ण कृष्ण सब कोई कहे, पर भेद न जाने कोय ।**
**नाम एक है जगमें, पर लीला त्रिविध होय ।।**

अर्थात् श्री कृष्णका नाम एक है किन्तु काम अलग अलग हैं ।

## अक्षरातीत श्री कृष्णकी लीला :

**आत्मत्वेन क्षरादेव तद्विलक्षणमक्षरम् ।**
**अक्षरात्परमत्वेन भोक्तुर्द्रष्टा विलक्षणम् ।।**

**भगवानक्षरं ब्रह्म तत्परं पुरुषोत्तमम् ।**
**स्वरूपं सच्चिदानन्दं पूर्णं ब्रह्म सनातनम् ।।**

**( आथर्वणीशोरोपनिषद् )**

क्षर ब्रह्म भगवान नारायणसे पर लक्षण विशिष्ट अक्षर ब्रह्म हैं । और अक्षर ब्रह्मसे भी पर साक्षीरूप पूर्ण पुरुषोत्तम सच्चिदानन्द स्वरूप अक्षरातीत श्रीकृष्णका निवास है । इस विश्व ब्रह्मांडमें जितनी भी तेजराशि हैं । वे सभी इन्हीं पूर्ण ब्रह्म परमात्मा द्वारा ही मिलती है । अन्ततः उनमें ही जाकर सम्मिलित हो जाती है ।

**यस्मिन्सर्वाणि तेजांसि विलीयन्ते स्वतेजसी ।**
**तं वदन्ति परे साक्षात् श्री कृष्णो नान्य एव हि ।।**

**परिपूर्णतमः साक्षात्, श्री कृष्णो नान्य एव हि ।**
**एक कार्यार्थमागत्य कोटि कार्यं चकार हः ।।**

**गर्गसंहिता गो.अ.१**

अर्थात् जिनमें सम्पूर्ण तेजराशियोंका लय होता है उसी ब्रह्मको शास्त्रमें पूर्ण ब्रह्म परमात्मा अक्षरातीत श्री कृष्ण कहा है । ऐसे परमब्रह्म परमात्माने जब सर्व प्रथम ब्रह्मात्माओंको परमधामका सुख एवं ब्रह्मानन्दकी अनुभुति करानेके लिए व्रजमण्डलमें आकर जो ब्रह्मानन्द लीला की उस लीलाको अक्षरातीत श्री कृष्णकी लीला कहते हैं । जिन्होंने ११ वर्ष एवं

५२ दिन पर्यन्त ब्रह्मात्माओंके साथ दिव्य एवं आनन्दमय लीला की ।

अक्षर प्राधान्य (गोलोकीनाथ श्री कृष्णकी) लीला : ग्यारह वर्ष और ५२ दिवसके पश्चात् जिन्होंने अपनी वादानुरुप वेद ऋचाओंको परमानन्दकी अनुभुति कराई एवं कंशोद्धारादि विशेष कार्य किया उस लीलाको अक्षर लीला अथवा गोलोकी नाथ श्री कृष्णकी लीला कहते हैं। जिन्होंने रास लीलाके पश्चात् सात दिन गोकुलमें एवं चार दिन मथुरामें कुल ११ दिनकी लीला की । महामति श्री प्राणनाथजी कहते हैं,

**दिन अग्यारे ग्वाला भेस, तिन पर नहीं धनीको आवेस ।**<br>
**सात दिन गोकलमें रहे, चार दिन मथुराके कहे ॥**

**गजमल कंस को कारज कियो, उग्रसेनको टीका दियो ।**<br>
**वसुदेव देवकीके लोहे भान, उतार्यो भेष कियो स्नान ॥**

**जब राज वागेको कियो सिनगार,**<br>
**तब बल पराक्रम न रह्यो लगार ॥**

अर्थात् रास लीला पूर्ण होते ही अक्षरातीत श्री कृष्णका आवेश भी चला जाता है। अब उस कलेवर (तन) में गोलोकी नाथ श्री कृष्णकी शक्ति प्रवेश होती है। अब आगेकी लीला जैसे सात दिन गोकुलकी एवं चार दिन मथुराकी इस तरह ग्यारह दिन पर्यन्त गोलोकीनाथ श्री कृष्णकी लीला चलती है । जब श्री कृष्णजी वसुदेव एवं देवकी माताको कारागृहसे मुक्त करके यमुना तट पर पहुँच कर अपने ग्वाल भेषको उतार देते हैं तब ही यह (गोलोकी) शक्ति भी गोलोक धाम चली जाती है। यहाँतक की लीलाको श्री कृष्णकी द्वितीय लीला अर्थात् अक्षर अथवा गोलोकी नाथकी लीला कही जाती है ।

क्षर (वैकुण्ठनाथ भगवान विष्णुकी पूर्णावतार) लीला : कंशोद्धार पश्चात् यमुनाजीमें जाकर श्री कृष्णजीने अपने ग्वाल भेषको उतार कर स्नान किया। स्नान करनेके बाद श्री कृष्णने जैसे ही राज भेष धारण किया तब ही श्री कृष्णको लगा था की मेरे अन्दर जो शक्ति विद्यमान थी अव वह

नहीं रही । अब यहाँके बाद समग्र लीलाको क्षर लीला अथवा वैकुण्ठवासी श्री कृष्णकी लीला कहते हैं । यदि हम शास्त्रको सही ढंगसे मंथन करें तो यह रहस्य अवश्य खुल जाएगा ।

**आये जरासंध मथुरा घेरी सही, तब श्री कृष्णजीको अति चिन्ता भई ।**
**यों याद करते आया विचार, तब श्री कृष्ण विष्णुमय भयो निरधार ॥**

**तब वैकुण्ठमें विष्णु ना कहे, इत सोले कला संपूर्ण भये ।**
**या दिनथें भयो अवतार, ए प्रकट वचन देखो निरधार ॥**

अर्थात् अपने दामाद कंस वधकी बात पता लगते ही बदलेकी आगमें जलता हुआ जरासंध श्री कृष्णसे युद्ध करनेके लिए अक्षौहिणी सेनाके साथ मथुरामें आता है तब श्री कृष्णको चिन्ता होती है कि ओह ! अब मैं क्या करूं ? इतनी बड़ी सेनाके साथ मैं युद्ध कैसे करूगा ? इसी समय उन्हे अपने विष्णु स्वरूपका ध्यान आता है । ध्यान आते ही उसी क्षण भगवान विष्णुकी समस्त शक्ति (संपूर्ण कला) उनके देह पर प्रवेश करती है । तबसे वे विष्णुमय बन जाते हैं । इसीलिए अब यहाँसे भगवान विष्णुकी (श्री कृष्ण) अवतारकी लीला आरम्भ होती है । इसे ही क्षर लीला कहते हैं । यह भगवान विष्णुका पूर्ण अवतार है । इसीलिए तो भागवतमें कहा है, **'एतेचांशकला पुंस कृष्णास्तु भगवान स्वयम्'** अर्थात् अभी तक जितने भी अवतार हुए वे सभी अंश, अंशाश, कलादि अवतार थे । किन्तु कृष्णको पूर्ण अवतार मतलव स्वयं भगवान माना गया है है । क्योंकि तब भगवान विष्णु वैकुण्ठ छोड़कर यहाँ पर स्वयं पधारे थे । इसकी बातकी स्पष्टीकरण भी हमें भागवतसे ही मिलेगी । हम शिशुपाल वध प्रसंगको ध्यानसे पढ़े । महामति श्री प्राणनाथजी कहते हैं,

**सिसपालकी जोत वैकुण्ठ गई, समाई श्री कृष्णमें तित ना रही ।**
**आउध अपने मगाएके लिए, कै विध जुध असुरोसों किए ॥**

अर्थात् शिशुपालका वध होने पर उसकी आत्मा (ज्योति) वैकुण्ठ धाम गई । उस समय भगवान विष्णु तो सोलह कलाओं सहित संसारमें आ गए थे इसलिए वहाँ विष्णु भगवानको न पाकर वह ज्योति जगतमें

लौट आई और श्री कृष्णमें समा गई। इस प्रकार विष्णु भगवानके अवतार श्री कृष्णने वैकुण्ठ धामसे अपने अस्त्र शस्त्र एवं रथ मंगवा लिए और आसुरी बुद्धि वाले राजाओंसे अनेक युद्ध किए।

अर्थात् जब अक्षर एवं अक्षरातीत ब्रह्मके अवतरणका उद्देश्य पूर्ण हुआ था श्री कृष्णके कलेवरमें जरासंध युद्धके समय धर्मकी स्थापना, अधर्मका नाश, साधु–सज्जनोंकी रक्षा एवं दुष्ट प्रवृत्ति वालोंके विनाश जैसे अनेक कार्य करनेके लिए साक्षात् वैकुण्ठाधिपति भगवान विष्णु सोलह कलाके साथ अवतरित होते हैं। यहाँसे अब द्वारिका पर्यन्तकी सभी लीला विष्णु कृष्ण लीला मानी गई है। इसीलिए कहा है, **मथुरा द्वारका लीला कर, जाए पहोंचे विस्नु वैकुण्ठ घर।**

त्रिधा लीलाके विषयमें हृदय साहजी कहते हैं, वृन्दावन, मथुरा और द्वारिकाकी शक्तियोंमें अन्तर है–वृन्दावनमें उत्तम पुरुष अक्षरातीतका आवेश था। मथुरामें अक्षर ब्रह्मकी शक्ति थी और द्वारिका लीला सोलह कला सम्पूर्ण भगवान विष्णुके स्वरूपने की।

**जो सरूप खेल्यो सही, वृन्दावन सुख पाई ।**
**मथुराको जो सरूप है, ताको अंशकलाई ॥**

**मथुराको जो सरूप है, ताको कहो प्रभाई ।**
**जो स्वरूप है द्वारिका, ताको अंश कलाई ॥**

**जो सरूप है द्वारिका, षोडस कला प्रवीन ।**
**निजवासी बैकुण्ठको, ताहि जगत आधीन ॥**

इस रहस्यको सब कोई नहीं समझ पाते हैं।

श्री कृष्णका प्रथम प्रादुर्भाव वसुदेव देवकीके यहां काराग्रहमें होता हैं। जहां भगवान स्वयं अपने मुखारविन्दसे अपने अवतारका कारण प्रगट करते हुए देवकीसे कहते हैं,

**त्वमेव पूर्वसर्गेऽभूः पृश्निः स्वायम्भूवेसति ।**
**तदायं सुतपा नाम प्रजापतिरकल्मषः ॥**

हे माता, पूर्व जन्ममें आप युगल दम्पतिने सुतपा और पृश्निके रूपमें अपने भयंकर तपके बलसे मुझे प्रसन्न कर मेरे समानही रूप गुण कर्मसे युक्त पुत्रका वर मांगा था । अतएव उसी प्रदत्त वरके कारण मैंने स्वयं जन्म लिया है । भगवानकी इस प्रकार कल्याणमयी वाणी सुनकर वसुदेव देवकी अत्यन्त प्रसन्न हुए, परन्तु कंसके भयसे व्याकुल होकर प्रभुसे बोले कि हे परमात्मन्, आप अपने इस दिव्य रूपको छिपा लें नहींतो कंसको पता लग जायेगा तो हमें बड़ा दुःख भोगना पडेगा और आपको भी सम्भवतः इस कलेवरसे जुदा होना पडेगा । अतएव आप ऐसा उपाय बतावें, जिससे हम अपनी और आपकी रक्षा कर सकें ।

वसुदेवकी व्याकुलताको देखकर उन्होंने कहा, हे वसुदेवजी, आप बिलकुल चिन्ता न करें, अति शीघ्र ही अनन्त ऐश्वर्य सम्पन्न अत्यन्त तेजस्वी परम दिव्य प्रकाश पुंज आपके सामने उपस्थित होगा, उसी तेजो पुंजमें यह जो मेरा स्वरूप है, विलीन हो जाएगा । उसे आप गोकुलमें नन्द पत्नी यशोदाजीको समर्पण कर आना ।

(यों तो श्री कृष्णावतारके सम्बन्धमें अनेक कारणोंका समावेश है । जैसे कि पाप पीडित पृथ्वीका गोरूप धारण कर वैकुण्ठमें जाना, देवताओंके साथ ब्रह्माजीका भगवानसे अवतार धारण करनेके लिए आग्रह करना, वैकुण्ठमें लक्ष्मीजीका विष्णुजीकी ब्रह्म चिन्तन जिज्ञासाके लिए हठ करना और उसकी लीला द्वारा दिखलाना आदि आदि । )

**इत्युक्तवति देवेशे तेजः कूट समुत्थित : ।**
**कोटि सूर्य प्रभापूर्णः प्रकाशः परमोज्वलः ।।**

**लीला वासनया व्याप्ता शुद्धवृत्तिं परात्मनः ।**
**तस्यामावेशयामास गोलोकीय रसं प्रभुः ।।**

**तावत्ते जसोमध्यादाविरासीच्छिशुश्छलात् ।**
**चतुर्भुजं च मद्रूपं ह्यस्मिन्नेव तिरोदधे ।।**

इस प्रकार कहते ही कोटिसूर्योकी कान्तिके समान प्रकाशमान एक

दिव्याकृति द्विभुज शिशु वसुदेव देवकीके सामने उपस्थित हुआ । इसी दिव्य स्वरूपमें चतुर्भुजी विष्णुका स्वरूप तिरोहित हो गया और इसी द्विभुजी गोलोकीय स्वरूपमें अक्षर ब्रह्मकी शुद्ध वासना तथा पुरुषोत्तम अक्षरातीत धाम धनी प्रभुके आवेशका प्रवेश लगभग एक ही साथ माना जाता है ।

उपरोक्त परम दिव्य सामग्रीसे युक्त श्री कृष्णको वसुदेवजी गोकुल लेकर जाते हैं और उनकी आज्ञानुसार महामाया रूप कन्याको ले आते हैं । अतएव यह परम दिव्य विभूति विष्णुका अवतार नहीं बल्कि इसी दिव्य तम विभूतिको ही कृष्णस्तु भगवानस्वयम् कहा गया है । इसलिए यह तो साक्षात् पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घनका ही स्वरूप था । क्योंकि वह जब अज है शाश्वत है, अजर अविनाशी है तो उसका जन्म कैसा ? उस नित्यरूपमें जन्म मरणका बन्धन कैसा ? और यशोदाके उदरसे तो महामायाका प्रादुर्भाव हुआ था, फिरभी कृष्णका जन्मोत्सव नन्द यशोदाजीके घरमें ही मनाया गया । अतएव यह स्वतः सिद्ध है कि इस नन्दनन्दन यशोदानन्दनको अवतारकी कोटिमें न मानकर कृष्णस्तु भगवान स्वयंम् यही मानना पड़ेगा । और स्वयम् इस पदसे सच्चिदानन्द घन ब्रह्मको ही स्वीकृत किया जाता है । इसलिए इस दिव्यरूपको पूर्ण ब्रह्म स्वीकृत करना ही सर्व मान्य है ।

अनेक श्रुति स्मृतियोंमें श्री कृष्णके साक्षात् परब्रह्म स्वरूपका ही वर्णन मिलता है । जैसे,

**यस्मिन्सर्वाणि तेजांसि विलीयन्ते स्वतेजसि ।**
**तं वदन्ति परे साक्षात्परिपूर्णतमंस्वयम् ॥**

**पूर्णब्रह्म स्वरूपोऽयं शिशुस्ते मायया महीम् ।**
**आगत्य भारहरणं कर्ता धात्रा च सेवितः ॥**

इत्यादि प्रमाणोंके द्वारा नन्द नन्दनका साक्षात् पूर्ण सच्चिदानन्द घन ब्रह्मका होना ही सर्व सम्मत है । इसी पूर्णब्रह्म स्वरूप दिव्य परमधामकी

चिन्मय ऐश्वर्य विभूतिसे सम्पन्न श्री कृष्णने व्रजमण्डलमें नाना प्रकारकी बाल सुलभ क्रीडायें की। गोपियोंके स्वरूपमें दिव्य धामसे विश्व कौतुकको देखनेकी लालसासे अवतरित ब्रह्मांगनाओंके साथ अनेक प्रकारकी बाल लीलायें कर उनके अनन्यतम स्वामी बनकर गोपीवल्लभ गोपीनाथ आदि अनेक पवित्र नामोंको चरितार्थ किया। इसीको पुष्ट करते हुए लिखा गया हैं,

**साक्षात्कृष्णो व्रजे नित्यं स्वांशेनैव विहारिणः ।**
**तस्यांशो हि मथुरायां वासुदेवो जगद्गुरुः ।।**

इस श्लोकसे भी यह प्रतीत होता है कि मथुरा और द्वारकामें लीला करनेवाले श्री कृष्ण उनके अंश मात्र थे। कंसकी हस्तीको नेस्त नाबुद करनेवाले वासुदेव थे, यशोदा नन्दन–नन्दलाला नहीं। इसका स्पष्टी करण निम्न श्लोकमें विशेष रूपसे मिलता है। जैसे,

**कंसं जघान वासुदेवः श्री कृष्णो नन्दसूर्नतु ।**
**द्वारिकायां ययौ विष्णुं कृष्णांशाद्यो जगत्प्रभुः ।।**

**सैव कृष्णो द्विधाभूतः द्विभुजश्च चतुर्भुज ।**
**चतुर्भुजश्च वैकुण्ठे गोलोके द्विभुजः स्वयम् ।।**

इस प्रकार इन उपरोक्त श्लोकोसे भी श्री कृष्णके तीन भेद (वैकुण्ठवासी, गोलोकीय और परमधामवासी कृष्ण) सिद्ध हो जाते हैं। सभीके प्रादुर्भावके कई कारण और उपकारण शास्त्रोंमें प्रसिद्ध हैं।

गोकले मथुरायाँश्च द्वारावत्यामनुक्रमात् लीलां त्वेवाकरोत्कृष्णः

इस प्रकार श्री कृष्णकी त्रिधा लीलाका शास्त्रोंमें अत्यन्त विशद विवेचन मिलता है। महामति श्री प्राणनाथजी महाराजने कृष्णकी त्रिधा लीला पर बहुत गम्भीर विवेचन किया है। परन्तु यहाँ तो केवल विषयका दिग्दर्शन मात्र ही किया गया है।

# लीला नवतनपुरी विस्तार

**धर्मभूषण कुञ्जबिहारीसिंह कुशवंशी ( इटावा उ. प्र. )**

श्री मन्निजानन्द सम्प्रदाय श्री कृष्ण प्रणामी धर्म आखिल ब्रह्माण्डकी अनुपम धरोहर है । कारण कि, आखिल ब्रह्माण्डको इसके द्वारा ही अखण्ड ब्रह्मज्ञान राशिका दिग्दर्शन एवं अखण्ड मोक्षका द्वार प्राप्त हुआ है । महामति श्री प्राणनाथ प्रणीत श्री तारतम सागर स्वसं वेदकी निम्न वाणी सभीकी आत्माचक्षु खोलनेमें समर्थ हैं,

**सब संसेको कियो निरवार, कोई संसा ना रह्या वारके पार ।**
**रौसन करूँ लेऊ हुकुम बजाए, ब्रह्मसृष्टि और दुनियाँ देऊँ जगाए ॥**
**द्वार तोवाके खुले हैं अब, पीछे तो दुनिया मिलसी सब ॥**

अर्थात् समग्र संशयोंका निवारण हो गया है । जगत, माया और ब्रह्म परब्रह्मके विषयमें कोई शंका शेष नहीं है । अब (मैं) वाणीके प्रकाशसे परब्रह्म परमात्माके हुकुमको सारे संसारमें प्रकाशित करूँगा । इसीसे समस्त ब्रह्मआत्माओं और संसारके लोगोंको भ्रमकी नींदसे जगा दूँगा । अब प्रायश्चितका द्वार खुल गया है और सारी दुनियाँ इस ज्ञानके माध्यमसे एकाकार हो जाएगी । अर्थात् इस सत् ज्ञानका लाभ समग्र दुनियाँको प्राप्त हो जाएगा ।

ऐसा अनुपम, परम पावन श्रीमद्तारतम सागरकी प्राकट्य भूमि नवानगर (जामनगर) में विद्यमान समूचे ब्रह्माण्डमें उत्तम श्री ५ नवतनपुरी धामकी पावन धरामें हुआ है । इस पावन भूमिका माहात्म्य इसी अपौरुषेय वाणीमें विद्यमान है । जो धर्मप्रेमी एवं वाणीके अध्ययन करनेवाले सुज्ञ सुन्दरसाथ सभीको न्युनाधिक रूपसे जानकारी है । अतः अभी यहाँ पर नवरंगवाणीके द्वारा कुछ जानकारी प्राप्त करते हैं । जिसमें नवतनपुरीका महात्म्य विद्यमान है । नवरंग वीतक प्रकरण ८ में धाम माहात्म्यका वर्णन निम्न प्रकार है,

**सार तत्त्व सम्बन्धी सार, लीला नौतनपुरी विस्तार ।**
**लीला व्रज जीवनकी जेती, हुई नौतनपुरीमें तेती ।।**

परम पावन नौतनपुरीकी लीलाका विस्तार असीमित है, जिसमें आत्मसम्बन्धी साथियोंके लिए सार तत्त्व संनिहित है । व्रजमम्डलमें जैसी लीला हुई थी, उसी लीलाका पुनरावर्तन नवतनपुरीमें हुआ ।

**लीला रास केरी सुखकारी, नौतनपुरी भई ते सारी ।। ३**
**लीला मूल सरूप की जेही, नौतनपुरी भई जो तेही ।। ४**

अखण्ड सुखोंसे भरपूर रासलीला अखण्ड वृन्दावनमें हुई थी, वही सारी लीला पुन: नौतनपुरीमें हुई ।

यह लीला मूल स्वरूप प्रगट प्रकाश, लीला नित्यानन्द विलास ।

**लीला बाल पौगंड किसोर, होय नौतनपुरी में जोर ।। ६**

नौतनपुरी धाममें पंचस्वरूपोंका प्रकाश फैला, जिसमें प्राणी मात्रको लीला विलासमें नित्यानन्दकी साक्षाद् अनुभूति हुई । व्रजमें सम्पन्न शिशु, बाल और किशोरावस्था वाली लीलाओंका जोर श्री नवतनपुरी धाममें (सद्गुरु श्री निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी महाराजके समय वि.सं. १६८७–१७१२ तक) सुन्दरसाथ के मध्य हुआ(वाणी अवतरण कालमें भी लीलाओंका पुनरावर्तन हुआ) ।

**व्रज जीवन नटवरनाथ, विलसे नौतनपुरीने साथ ।। ७**
**दधि दूध माखन कै भांत, वली कई आवे रे साक्षात् ।। ८**

व्रजवासियोंके जीवनधन व्रजविहारी नटवर नाथ थे, वही नौतनपुरीमें सुन्दरसाथ ब्रह्मआत्माओंके साथ नित्य विलास करते रहे । सखियोंके यहाँ स्वामी व्रजाधिपति साक्षात्स्वरूपमें दूध–दधि माखन आदि ला लाकर (नवतनपुरीमें) देते थे ।।

**मही माटे अनेक विलोके, घम घम महासुर बोले ।। ९**
**घट पर चढे, लोक पेखे, सबद सुने पुन द्रष्ट न देखे ।। १०**

अनेक गोपियाँ दही मन्थन करती, जिनकी मथानीके धम धमके गम्भीर स्वर चारों तरफ कानमें गूँजते थे । आवाज सुनकर पास पडोसके लोग घरों के ऊपर देखने के लिए चढते, परन्तु शब्द तो सुनाई देते पर दृष्टिमें कुछ नहीं आता ।

**कै मेवा मिठाई अनेक, नीला लवंग सोपारी विसेक ॥ ११**

**चित्रनी जमुनाजी माही, जल खलक्या अदभुत तांही ॥ १२**

अनेक तरहकी मेवा–मिठाईयाँ व लवंग, लौंग सुपारी इत्यादि भी लीला में विद्यमान हो जाती थी । एक बार सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्रजी महाराज जब सुन्दरसाथको जमुनाजीके विषयमें समझा रहे थे चित्रके माध्यमसे तो चित्र खींचते ही उसमें प्रबल जल धाराके साथ पावनानां च पावनं जमुनाजीका स्वरूप प्रकट हुआ । सुन्दरसाथ हर्षोल्लासपूर्वक इस पावन जमुनाजीका पान एवं स्नान करने लगे । यह पावन जमुनाजी आज लोगोंको पावन कर रही है ।

घर घर दरसन दिये नित, वालो विलसे अनेक विधि प्रीत ॥ १३

व्रजमें विलस्यो जिन भांत, नौतनपुरी विलस्यो दिन रात ॥ १४

नित्य प्रति घर घर में दर्शन मिलते और अनेक तरहसे स्वामी प्रेम–विलास करते, इस तरहसे जिस तरह व्रजराजने व्रजमें लीला विलास किया उसी तरहसे उन्होंने रात–दिन नौतनपुरीमें सुन्दरसाथके संग विलास किया ।

**दरसन दिये रूप अनेक, करे लीला विविध विसेक ॥ १५**

**दैवत देखाया कै विध, रसरूप सागर सुख सिंध ॥ १६**

नौतनपुरीमें परब्रह्म परमात्मा अक्षरातीत श्री कृष्णने अनेक लीलाके माध्यमसे सुन्दरसाथको विविध प्रकारसे दर्शन देकर धन्य बनाया । इस प्रकार तरह–तरहकी विशेष लीलायें इस पावन धाममें हुईं । अनेक प्रकारसे लीलाका दैवत (बल–शक्ति) दिखाया और लीला रससे विविध स्वरूपका दरिया सुख सागरके रूपमें संचरित होता रहा ।

**व्रजरास की लीला गाए, तारतम कबहूँ नेक लखाए ॥ २३**

**व्रज रासको प्रेम लखाती, तारतमें स्वरूप दिखाती ॥ ३१**

सुन्दरसाथके बीच सद्‌गुरु धनी श्री देवचन्द्रजीने व्रज और रासकी अलौकिक लीलाओ का खुब गायन और बीच बीचमें नेक तारतम स्वरूपकी झलकका भी दर्शन कराते रहे। व्रज और रासके अनुपम प्रेम लीलाका चर्चा द्वारा सुन्दरसाथको खुब दिग्दर्शन कराया और तारतमके साक्षात्स्वरूपको भी प्रत्यक्ष दिखाया ॥

**व्रज रास अखण्ड बतावी, दोऊ लीला मूल लखावी ॥ ३४**
**लीला साथ तणा सुख दीधा, जनम धन धन साथमा कीधा ॥ ३५**

व्रज रासकी अखण्ड लीलाको सद्‌गुरु धनी श्री देवचन्द्रजीने नवतनपुरीमें खूब समझाया और दोनों लीलाओंके मूल स्वरूपको उन्होंने यहाँ सभी प्रत्यक्ष दिखाया। इस प्रकारसे श्री नवतनपुरी धाममें सुन्दरसाथको व्रज, रास एवं जागनी लीलाकी सुखानुभुति प्राप्त हुई ।

**ए कही धनी की मैं कही, ब्रह्मसृष्टि लखो ए सही ॥ १००**
**श्री सुन्दरसाथ इन्द्रावती संगे, नित नवल रंग नवरंगे ॥ १०१**

स्वामी श्री मुकुन्ददासजी (नवरंग) कहते हैं कि मैंने चह चर्चा धामधनी अक्षरातीत श्री कृष्णजीकी आज्ञासे कही है । इस कथाचर्चाको वास्तविक रूपमें ब्रह्मसृष्टि सुन्दरसाथ ही दृष्टिपात कर पाते हैं। नित्य नूतन रंग रसभरी लीलाओंसे ओतप्रोत श्री सुन्दरबाई और इन्द्रावतीबाईके सान्निध्यमें नवरंग सराबोर है ।

स्वामी श्री नवंरगजीने श्री नवतनपुरी धाममें हुई लीलाओंका वर्णन लघु वीतक ग्रन्थमें चित्रण शैलीमें भली भाँति किया है, इससे इस धामके माहात्म्यको हृदयमें आत्मसाथ किया जा सकता है । व्रज और रासकी लीलाओंका इस पावन भूमि पर पुनरावर्तन होना वाणी और वीतकसे स्वयं सिद्ध होता है । वाणी अवतरणके समय भी प्रबोधपुरी (हब्सा–कारागार) में इन लीलाओंका अवतरण होना प्रणामी वाङ्मयमें प्रमुखताके साथ उल्लिखित मिलता है ।

जगज्जीव लीला नवतनपुरी विस्तारके स्वरूपको विना तारतम ज्ञानके अन्तःकरणमें धारण नहीं कर सकते । परन्तु यहाँके रजकणकी सान्निध्यता पाकर अपना जीवन अवश्य धन्यकर लेते हैं । व्रज और रासकी लीलाओंसे सरावोर यह धरा ब्रह्माण्डमें अद्वितीय है । जगज्जीव यहाँ आकर धन्य धन्य हो जाते हैं । यहाँ पर निशदिन व्रज, रासका आनन्द बरसता रहता है । निम्न वाणी मननीय एवं सेवनीय हैं,

**व्रज रासको प्रेम लखावी, तारतमें स्वरूप दिखावी ॥**
**तीरथ श्री जमुनाजी सुहाए, फल हम नित्य विहारे पाए ॥**

वस्तुतः श्री ५ नवतनपुरी धामकी अनन्त महिमाको उक्त वाणी वचन आज भी मुखरित कर रहे हैं । निम्न वचन अद्यावधि जिज्ञासु जनों एवं सुन्दरसाथकी लीला नवतनपुरी विस्ताके परम गुह्य रहस्यको आत्मसाथ करानेमें सक्षम हैं । यह कहना सर्वथा समीचीन है कि व्रज–रासकी अद्वितीय भूमिकाको नवतनपुरीमें धामधनीने साक्षात्स्वरूपमें प्रगट किया है, इसी कारणसे तो महामति स्वामी श्री प्राणनाथजीने हरिद्वार धर्मविजयके दौरान 'पुरी नवतन मम जोय' का उद्‌घोष किया । ये वचन वस्तुतः अत्यन्त ही मननीय हैं ।

**जब थे तारतम धनी ल्याए, गुप्तागुप्त आप सुहाए ॥ २३**
**यों लीला व्रजमें कीनी, कृष्ण प्रिया गोपी ने चीनी ॥ २४**
**जो कृष्ण प्रिया पहिचानी, सो कुमारिका नही जानी ॥ २५**
**जो कुमारिका को लखाई, सो बलभद्र न ही वाई ॥ २६**
**बलभद्र लखी विद जेही, नन्द जसोमती जाने न तेही ॥ २७**
**नन्द जसोमती जे पायो, सखा सुदामाको न लखायो ॥ २८**
**जो राधा सबोने देखी, सो व्रजवासी नही पेखी ॥ २९**
**जो व्रजवासी भेद न जाने, सो मधुपुरके नहीं माने ॥ ३०**
**जो गारगाचारज लखि पावने, तो व्रज छोड़ कहीं नहीं जावे ॥ ३१**
**प्राक्रम सम्बन्ध था जैसो, ताने सरूप पहिचानो तैसो ॥ ३२**
**जासू सम्बन्ध था जैसो, ताने स्वरूप पहिचानो तैसो ॥ ३३**
**जो जैसो है अधिकारी, तिन तैसी लीला विचारी ॥ ३४**

**बिना सम्बन्ध लखे न कोई, कृष्ण प्रिया लखी निज जोई ॥ ३५**
**या विध नौतनपुरी मांही, कीनी लीला पहिचानी नाही ॥ ३६**
**व्रज रास लीला ए सोई, बिना सम्बन्ध पहिचाने न कोई ॥ ३७**
**ए है लीला सोई जाने, बिना सम्बन्ध जीव नहीं पहिचाने ॥ ३८**

उक्त वीतक वचनोंसे श्री ५ नवतनपुरी धामके माहात्म्यको और वहाँ सम्पन्न हुई व्रज–रास लीलाओंको भली भाँति हृदयंगम किया जा सकता है ।

परमहंस स्वामी मकुन्ददास नवरंग द्वारा प्रणीत वीतकसे लीला नवतनपुरी विस्तारका वर्णन जगज्जीवोंको उर्ध्वमुखी जीवन पथ पर अग्रसर बनानेमें परम श्रेय कर है । सुन्दरसाथके मध्य इस पावन पुरीका माहात्म्य सदा–सदाके लिए अमिट बनकर रह गया है । इस महिमावान भूमिकी माहात्म्यको किञ्चित शब्दोंमें करना असम्भव है अतः स्थानाभावके कारण अभी इतनेमें ही अपनी लेखनी बन्द करना चाहता हूँ । इस पावन घराको पल पल प्रणाम ।

---

# जीवेत शरदः शतम्

**श्री ५ नवतनपुरी धाम, साथ सब सुख धाम ।**
**श्री राज श्यामाजीके चरण पर, पल पल करूं प्रणाम ॥**

**धन्य–धन्य नवतनपुरी, धन्य पूज्य आचार्य महाराज ।**
**जिनके प्राकट्य दिवस पर, होगा मंगल काज ॥**

**धन्य–धन्य धनि सतगुरु, प्राणनाथ सुख पुँज ।**
**छत्र जहाँ राजका, वहीं मनोहर कुँज ॥**

**'हीरा' अवगुण ना टरत, नाम मिलत प्रकाश ।**
**फिर भी चरण कृपा प्रभू देखी हृदय उलास ॥**

**हीरालाल तिवारी– कपसा, रीवा ( म.प्र )**

# ईश्वर यत् करोति शोभनम् करोति

परमात्मा कभी बुरा नहीं करते, केवल हमारी समझका फेर है ।

एक कहानी द्वारा हम इसको समझनेकी कोशीश करते हैं,....

एक राजा शिकारका शौकीन था । सदा अपने मंत्रीको साथ रखता और शिकार पर जाता । उसके मंत्रीका परमात्मामें बड़ा विश्वास था । वह सदा प्रसन्नचित्त रहता । कैसी भी परिस्थिति सामने आ जाए, सदा यही कहता–**ईश्वर यत् करोति शोभनम् करोति,** अर्थात् परमात्मा जो करता है अच्छा ही करता है ।

एक बार गन्ने छिलते समय राजाकी उंगलीमें चाकू लग गया, उसकी उंगली कट गई । मंत्री पास ही बैठा था, अपनी आदतके अनुसार बोल उठा–ईश्वर यत् करोति शोभनं करोति ।

यह बात राजाको चुभ गई । उसने सोचा कि मेरी तो उंगली कट गई और यह कहता है 'अच्छा हुआ' बस, वह क्रोधिक हो उठा और तुरन्त सिपाहियोंको बुलाकर आदेश दिया कि मंत्रीको गिरफ्तार करके कारावासमें डाल दिया जाए । तुरन्त ही मंत्री महोदयका गिरफ्तार कर लिया गया, तब भी उसने यही कहा, 'ईश्वर यत् करोति शोभनं करोति' और सैनिकोके साथ कारावासमें चला गया ।

कुछ देरके बाद राजाकी शिकार पर जानेकी इच्छा हुई । मंत्रीसे चूंकि वह चिढ़ गया था, इसीलिए अकेले ही शिकार पर चला गया । जंगलमें जाकर वह मार्ग भटक गया । जहाँ पहुँचा, वहाँ जंगली लोग रहते थे । उन्होंने राजाको पकड़ लिया । उनके सरदारने कहा कि इसकी बली चढ़ाई जाएगी । सुनते ही राजाका दम घुटने लगा । यदि मंत्री साथमें होता तो मैं रास्ता न भटकता । मगर अब क्या कर सकता था ।

जंगली भिलोंने उनके देवीके सम्मुख अग्नि प्रज्वलित की, ढोल–मंजीरे बजे और बलिका समय आ गया । तभी जंगलियोंके पुरोहितने राजाको निरीक्षण कर घोषणा कि यह खण्डित है, इसकी उंगली कटी है, इसीलिए इस खण्डित बली देवी स्वीकार नहीं करेगी । इसे मुक्त कर दिया

जाय । राजको मुक्त कर दिया गया । राजा मुक्त होते ही वहाँसे भागा और मार्गमें सोचने लगा कि उंगली कटना अच्छा ही सिद्ध हुआ । यदि उंगली न कटी होती तो आज जीवन खत्म था । इसका मतलब मंत्री ठीक ही कहता था ।

पश्चात्ताप करता राजा महलमें लौटा और सिपाहियोंको आदेश दिया कि मंत्रीको सम्मान सहित उसके पास लाया जाए । मंत्री आया । होंठो पर वही मुस्कान । राजाने उसे पूरी आपा बिती सुनाई और क्षमा मांगी । फिर पूछा–मेरी उंगली कटी, इसकी अच्छाई यह सामने आई कि मैं बली चढ़नेसे बच गया । मगर तुम्हारे साथ ईश्वरने क्या अच्छाई की जो मेरी बुद्धि फेरकर तुम्हें कारागारमें डलवा दिया ?

मंत्री बोला–महाराज ! यदि आप मुझे कारागारमें न डलवाते तो सदाकी भाँति मैं भी आपके साथ शिकार पर जाता और वह जंगली हम दोनोंको पकड़ लेते । आप तो अपनी खण्डित उंगलीके कारण बच जाते और मेरी बलि चढ़ जाती, इसलिए मुझे कैदमें डलवाकर ईश्वरने मुझ पर कृपा की । अब राजा समझ गया कि वास्तवमें **ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है ।**

---

# ना रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी

श्री कृष्णकी नटखट लीला तो सभीको ज्ञात ही है । इनको बचनपसे ही बाँसुरी बजानेकी लगन थी । ग्वाल वाल रोजाना गाय चराने जाते थे । श्री कृष्ण इनके बीच बाँसुरी बजाते रहते थे । इनकी बांसुरीकी आवाज इतनी सुरीली और मधुर होती थी कि जो भी सुनता था, वह मुग्ध हो जाता था । श्री कृष्णकी बांसुरीकी आवाज जादूका काम करती थी । जो भी आवाज सुनता था, वह बांसुरीकी ओर इस तरह खिंचता चला जाता था जौसे कोई वस्तु चुंबककी ओर खिंची चली जाती है । कहते हैं बासुरीकी आवाज सुनकर गाय एवं वछडे तक मुग्ध बन जाते थे ।

विशेष कर गोपियाँ इस आवाजमें पागल थी । सभी गोपियाँ श्री कृष्णके पास पहुँच जाती थीं । प्रारम्भमे घण्टे दो घण्टे बांसुरी सुनकर चली

जाती थीं । धीरे धीरे गोपियाँ बांसुरी सुननेमें अधिक–से–अधिक समय बिताने लगीं और गृहकार्यमें समय कम रहने लगा । कुछ गोपियाँ तो ऐसी भी थी जो घरमें अपने बच्चोंको भी छोड़कर बांसुरी सुनने श्री कृष्णके पास चली जाती थीं ।

श्री कृष्ण भी दिनभर बांसुरी ही बजाते ही रहते थे । अब तो गोपियाँ एवं उनकी बेटियाँ भी श्री कृष्णसे बेहद प्रेम करने लगी । कभी कभी बांसुरीकी आवाज रातके सन्नाटेको चीरती हुई दूर–दूर गांवों तक जा पहुँचती थी । ग्वालों और ग्वालिनों पर बांसुरीका एक जादू–सा प्रभाव होता था और रातके समय भी बांसुरी सुननेके लिए घरसे निकल पड़ते थे ।

घरोंमें बड़ी अव्यवस्था होने लगी । गृहकार्यका भी किसीको ख्याल नहीं आता था । घरमें वृद्धलोग रहते थे तो कै बार उनको ही घरका काम काज करना पड़ता था । शनैः शनैः लोक–लाजका सवाल भी उठने लगा । गांवोकी युवतियाँ और बहु बेटियाँ लोक–लाज त्यागकर श्री कृष्णकी बांसुरी सुनने पहुंच जाती थीं । जब श्री कृष्णसे कहा गया, तो उन्होंने कहा, 'मैं तो अपनी बाँसुरी बजानेमें डूबा रहता हूँ मैं किसीको बुलाने तो जाता नहीं । आप अपने–अपने परिवार वालोंको समझाइए कि वे मेरे पास न आए' ।

बहू–बेटियाँ न तो घर वालोंकी बात मानती थीं और न किसी बाहरवालोंका उन्हें डर था । अब तो एक ही रास्ता रह गया था कि श्री कृष्ण ही बासुरी बजाना बन्द करें । गाँवोंके मुखिया, जमींदार आदि सभी परेशान थे । उन्होंने नन्दबाबाको समझाया, इसके बाद भी कोई समाधान नहीं हुआ तो लोग राजाके पास गये । सबकी बातें सुनकर राजाने कहा, देखो कोई किसीकी बात नहीं सुनता तो हम भी क्या कर सकते हैं ? एक काम करो पूरे गाँव एवं जंगलके साथ–साथ राज्यभरमें जहाँ जहाँ बासके पेड़ तथा झुरमुट है, उनको ही काट दिया जाय और उनमें आग लगा दी जाए । और श्री कृष्णके पास जो बांसुरी है उसको भी छिन लिया जाय, फिर तो, "**ना रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी**" भाषाशैलीमें प्रयोग होने वाली यह कहावतका जन्म ऐसे हुआ था ।

## परम पूज्य जगद्गुरु आचार्य महाराजश्रीको पदार्पण घडी

# २०६४ मंसीर ३ लाई फर्केर हेर्दा ( दोलखाले )

महाराजश्रीको दोलखामा भएको थ्यो, प्रथम पदार्पण ।
दर्शन पाई यावत् वस्तु भएका थे, स्वयं समर्पण ॥
भएका थे स्वयं समर्पण ॥

ती पहरा छहरा, रूख बुटा लहरा ।
मुस्कुराई मुस्कुराई फूलहरू पनि, भएका थे हराभरा ॥
भएका थे हराभरा ॥

ती चाँदीका चुचुराले कति, हाँसी हाँसी दर्शन गरेथे ।
ती छहराहरू फालहाल्दै आई, कसरी चरण परेथे ॥
कसरी चरण परेथे ॥

ती गल्ली गल्छेडा कति भाग्यमानी, गद् गद् भै हाँस्न पाए ।
महाराजश्रीका पवित्र पदचिन्ह, आफ्ना छातीमा टाँस्न पाए ॥
आफ्ना छातीमा टाँस्न पाए ॥

गाईन आरती प्रकृतिले, लाईन जयकारा घुमी घुमी ।
कति धन्य वन्यो त्यो पुण्य भूमि, नतमस्तक वने सवै झूमी ॥
नतमस्तक वने सबै झूमी ॥

सपना हो या जपना थ्यो त्यो क्षण, हर्षाश्रु त वहने नै भो ।
केहि क्षणको भए पनि त्यो सम्झना अनन्त सम्म रहँने नै भो ॥
अनन्त सम्म रहने नै भो ॥

वरिपरि हिमश्रृङ्खलाहरूका, राख्दै पहरा पाले ।
महाराजश्रीको पुनरागमन पर्खीरहेछ दोलखाले ॥
पर्खीरहेछ दोलखाले ॥

*कृष्ण प्रसाद सुवेदी*
*( मथानी ) दोलखा, नेपाल*

॥ श्री कृष्णपरमात्मने नमः ॥

# आमन्त्रण

**धर्मपरायण सुन्दरसाथजी,**

अपार हर्षका साथ यो जानकारी गराउदछौं कि नेपालमा श्री कृष्ण प्रणामी धर्मको केन्द्रीय धामको रूपमा परिकल्पना गरिएको राष्ट्रिय स्तरको पर्यटकीय महत्व राख्ने तीर्थ स्थल श्री नवतनधाम मन्दिर निर्माणको प्रथम चरण पूरा भएको छ। **श्री राजजीको कृपा, श्रीमन्निजानन्दाचार्य आद्यधर्म पीठाधीश्वर जगद्गुरु अनन्तश्री विभूषित आचार्य श्री कृष्णमणिजी महाराजको** प्रेरणा, सबै सन्त–गुरुजन र धर्मपरायण सुन्दरसाथहरूको उत्साहपूर्ण सहयोग बाट नवनिर्मित मन्दिरको समुद्घाटन कार्यक्रम यहि **२०६६ साल चैत्र १६ देखि २२ ( ई.सन् २९ मार्च देखी ४ अप्रैल )** सम्म काठमाण्डौमा आयोजन गरिएको छ। प्रणामी जगतको गौरव एवं नेपालको एक अतुलनीय राष्ट्रिय धरोहरको रूपमा निर्मित यस आकर्षक मन्दिरमा **अक्षरातीत श्री कृष्ण–श्री राज श्यामाजीको पधरावनी** गरी **श्रीमत्तारतम–सागरको १२०० पारायण**का साथ **समुद्घाटन** गरिने कार्यक्रम छ।

आद्यधर्मपीठाधीश्वर जगद्गुरु अनन्तश्री विभूषित आचार्य श्री कृष्णमणिजी महाराजको सान्निध्यमा सम्पन्न हुने यो कार्यक्रम श्री कृष्ण प्रणामी धर्मका विशिष्ट सन्त एवं गुरुवरको विशेष प्रवचन तथा आशीर्वचनबाट शोभायमान हुने छ । यस पावन अवसरमा पारायण पाठ एवं गुरुजनको अमृतवाणी द्वारा साक्षात् श्री राज श्यामाजीको सामीप्यताको अनुभूति र नवनिर्मित नवतनधामको प्रथम दर्शनको लागि सपरिवार पाल्नुहुन सादर आमन्त्रण गर्दछौं । साथै अन्य सुन्दरसाथ एवं भक्तजनहरूलाई समेत यस महोत्सवमा सहभागी भई लाभ उठाउन प्रेरित गरिदिनुहुन अनुरोध गर्दछौं ।

**विनीत**

**मूल आयोजक समिति**

**श्री कृष्ण प्रणामी सेवा समिति नेपाल**

# परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके
# "प्राकट्योत्सव"

सुन्दरसाथजी, आप सभीको सुविदित ही है कि अन्तर्राष्ट्रीय पंचागका प्रथम दिन अर्थात् १ जनवरीका पावन दिन श्री कृष्ण प्रणामी धर्माचार्य जगद्गुरु आचार्य

श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराजका प्राकट्य दिन है। यह दिवस वैसे समग्र विश्वके लिए महत्त्वपूर्ण है। इस दिनका शुभारंभ लोग नया उत्साह, नयें उमंग, नयें तरंग एवं नया जोसके साथ करते हैं। कहते हैं **"आरम्भ भला तो अन्त भला"** अतः इस दिन लोग सम्यक् संकल्पके साथ विशिष्ट विचारसे ओतप्रोत हुआ करते हैं।

श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके लिए यह दिन और भी विशिष्ट इसीलिए है इसी दिन धर्मके चौदहवें आचार्यका प्राकट्य दिन है। इस दिन समग्र विश्वमें जहाँ जहाँ सुन्दरसाथ रहते हैं किसी न किसी रूपमें उनका प्राकट्य दिन मनाकर उन्हें शुभकामना व्यक्त करते हैं। विशेष कर प्रतिवर्ष श्री ५ नवतनपुरी धाममें यह उत्सव भव्यताके साथ मनाया जाता है।

प्रतिवर्षानुरूप इस वर्ष भी नूतन वर्ष २०१० का मंगलमय प्रभात श्री ५ नवतनपुरी धामके पवित्र प्रांगणमें भक्तिसंगीतके सुमधुर तानके साथ हुआ । इस पावन अवसर पर परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके चरणोंमें जन्मदिनकी शुभकामना एवं शुभभावना व्यक्त करनेके लिए एवं उनके दर्शन तथा स्पर्श कर जीवनको धन्य बनानेके लिए श्री ५ नवतनपुरी धामके सन्तजन, सेवाभावी ट्रस्टीजनके साथ–साथ स्थानीय एवं गुजरातके विभिन्न नगरोंसे पधारे हुए हजारों सुन्दरसाथके अतिरिक्त भारतके विभिन्न प्रान्तोंसे भी सुन्दरसाथ उपस्थित हुए थे ।

कार्यक्रमका शुभारंभ श्री राजीव लोचनने गुरु वंदनाद्वारा किया । इस

प्रसंगमें प्रणामी विद्या मंदिर एवं बाल मंदिरकी बालिकाओंने भाव वंदना एवं गुरुवन्दना प्रस्तुत कर परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके लिए शुभकामनायें व्यक्त की । प्रणामी हाईस्कूलके छात्रोंने उनके प्राकट्य उत्सव विषयमें सुन्दर वक्तव्य प्रस्तुत किया ।

श्री ५ नवतनपुरी धामके सेवाभावी ट्रस्टी संत श्री अमृतराज शर्मा, श्री

नवीभाई परीख, श्री तुलसीदास ठक्कर एवं श्री मनसुखभाई संघाणीने सर्वप्रथम परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीको माल्यार्पण एवं पुष्प गुच्छा अर्पण कर उनके चरणोंमें शुभेच्छा व्यक्त किया। इसके पश्चात् सन्त श्री अमृतराज शर्माजीने प्रासंगिक उद्बोधनके द्वारा शुभकामना की। उन्होंने परम पूज्य आचार्य महाराजश्री द्वारा हुए विकासके कार्य एवं गतिविधि पर भी प्रकाश डाला। तत्पश्चात् श्री नारायण स्वामी, श्री पुरुषोत्तम शास्त्री, श्री राजेन्द्र शास्त्री एवं शास्त्री श्री लक्ष्मण चैतन्यजीने शब्द सुमनोंसे शुभकामनायें अर्पित की।

इस अवसर पर श्री ५ नवतनपुरी धामके एक्जीक्युटीव ट्रस्टी श्री नवीनभाई परीखने भी परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीको शब्द पुष्प द्वारा शुभकामना देते हुए श्री ५ नवतनपुरी धामकी ओरसे वर्ष २००९ में हुई प्रगति एवं भावि कार्यक्रमकी रूपरेखा इस प्रकार प्रस्तुत की :

(१) उन्होंने मन्दिर परिसरकी विस्तृतिकरणका उल्लेख किया।

(२) नवदेहुरि (निर्वाणभूमि)के जीर्णोद्धारका उल्लेख किया। सभी सुन्दरसाथ इसके दर्शनका लाभ ले सकते हैं।

(३) अन्नपूर्णा भवनके ऊपर तीसरी मंजिल पर बनाये जाने वाले ३० नये कमरोंकी योजना बतायी। साथमें पाक घरके ऊपर बननेवाले १२ कमरे सहित कुल ४२ कमरे तथा लिफ्टका उल्लेख किया। इसके लिए १९ कमरोंकी सेवा प्राप्त भी हो गई है।

(४) सभी सुन्दरसाथको धर्मके पुराने हस्तलिखित एवं नये साहित्य पठनार्थ प्राप्त हो सके इसके लिए नवनिर्मित पुस्तकालयका भी परिचय दिया।

(५) अडियो एवं वीडियो रेकर्डिंग हेतु श्री ५ नवतनपुरी धाम परिसरमें नवनिर्मित आधुनिक सुविधा सम्पन्न स्टुडियो श्री राज श्यामाजी प्रोडक्शन हाउसके विषयमें भी प्रकाश डाला।

(६) म.प्र के सागर जिल्लेके सुन्दरसाथकी मांगको ध्यानमें रखकर सागर शहरके निकट सागर–कानपुर नेशनल हाईवे पर खरीदी गई रोड टच भूमिका भी उल्लेख किया।

(७) श्री बाईजी महाराजनी आश्रम धोराजीमें नवनिर्मित सभागार एवं आधुनिक कमरोंका उल्लेख करते हुए मन्दिर निर्माणके लिए वर्तमान परिसरको

बड़ा बनानेकी योजनासे अवगत करवाया ।

(८) गत ५ वर्षसे चल रहे ट्रस्ट द्वारा श्री कृष्ण प्रणामी सेवाश्रम शामलाजीमें नूतन मन्दिर एवं प्रदर्शनी निर्माण हेतु तैयार किए गए मॉडलका उल्लेख करते हुए मन्दिरकी भव्यतासे परिचय करवाया ।

(९) सुरतमें श्री ५ नवतनपुरी धाम द्वारा संचालित श्री कृष्ण प्रणामी बहुचराजी मन्दिरके जीर्णोद्धारसे भी अवगत करवाया ।

**अन्तमें परम पूज्य परम वंदनीय आचार्य महाराजश्रीने उपस्थित सभी सुन्दरसाथजीको आशीर्वाद देते हुए कहा, सुन्दरसाथजी ! आज आ.रा. केलेन्डरका प्रथम दिवस है । यह वर्ष गुजरातका सुवर्ण जयंतीका वर्ष भी है । स्वर्णिम गुजरात अर्थात् सुख, शांति तथा समृद्धिमय गुजरात । हमें इस अवसर पर व्यक्तिगत उन्नतिके साथ–साथ देशके विकासके लिए भी संकल्प करना चाहिए ।**

**आज आप सभीने यहाँपर उपस्थित रहकर हमें शुभ कामनायें दी है आप सभीकी शुभकामना एवं शुभभावनाको मैं साधुवाद देता हूँ । श्री ५ नवतनपुरी धामकी प्रगति आप सभी सुन्दरसाथके साथ एवं सहयोगके द्वारा ही हो रही है । यह सब श्री राजजीकी असमीम**

**अनुकम्पा एवं गुरुजनोंके आशीर्वादका ही परिणाम है । हम तो निमित्त मात्र हैं । श्री राजजी महाराज हम सभीको सेवा कार्यके लिए योग्य बनायें यही प्रार्थना करते हैं ।**

**इस नूतन वर्षमें प्रतिज्ञा करें कि हम भौतिक प्रगतिके साथ-साथ आध्यात्मिक गति भी तीव्र करेंगे । पूर्णब्रह्म परमात्माकी लीला, धाम एवं स्वरूपको जाननेका प्रयत्न करेंगे दूसरोंको भी बतानेका प्रयत्न करेंगे । महामति श्री प्राणनाथजीका उद्घोष ''ए सुख देऊं ब्रह्मसृष्टिको तो मैं अंगना नार'' को सार्थक बनाना हमारा कर्तव्य है । तब ही हम ब्रह्मसृष्टि कहलाने योग्य बनेंगे ।**

**हम अपने जीवनमें श्री राजजी महाराजके सान्निध्यका अनुभव करें । हमें सदैव उनकी अनुभूति हो ऐसा भाव मनमें प्रकट करें । सभीके लिए महामति प्राणनाथजीके अनुरूप ''सुख शीतल करूं संसार'' सुख, शान्ति एवं आनन्दकी कामना करें । इसके लिए अन्तःकरणें भक्ति एवं प्रेम भाव होना अत्यावश्यक है । हृदय पवित्र बनेगा तभी उससे तब ही प्रेम प्रवाहित होगा । इसके लिए अन्तःकरणकी शुद्धि अत्यन्त जरुरी है । भक्ति साधना द्वारा यह कार्य संभव होगा । यूँ तो सभीके ऊपर श्री राजजीकी कृपा बरसती रहती है किन्तु सभी उसका अनुभव नहीं कर पाते हैं । इसका अनुभव सभीको प्राप्त हो यही शुभकामना करते हैं ।**

परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके आशीर्वादके पश्चात् उपस्थित सन्तजन,

ट्रस्टीजन जामनगर शहेरके राजकीय एवं सामाजिक अग्रगण्यजन, प्रणामी विद्या परिसरके स्टाफ वर्ग एवं अमेरिकाके सुन्दरसाथके साथ-साथ उपस्थित सभी सुन्दरसाथने परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीको माल्यार्पण एवं पुष्प गुच्छ अर्पण

कर प्रणाम करते हुए आशीर्वाद प्राप्त किया।

कार्यक्रमका सुंदर संचालन श्री कनकराय व्यास द्वारा हुआ।

# रक्तदान एवं डायबिटिज परिक्षण शिबिरका आयोजन

परम पूज्य आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराजके जन्मोत्सवके पावन उपलक्ष्यमें ता.०१/०१/२०१० के दिन श्री ५ नवतनपुरी धामके प्रांगणमें रक्तदान तथा डायाविटिज परिक्षण शिबिरका आयोजन किया गया। **"रक्तदान जीवन दान"** का शुभ संकल्पके साथ शुरु हुआ रक्तदान शिबिरमें ७६ लोगोंने रक्तदान करते हुए अपने जीवनको धन्य बनाया।

आज विश्वमें डायाविटिज एक प्रमुख रोगोंके रूपमें बढ़ रहा है। लोगोंकी जीवन शैली इसका प्रमुख कारण माना जा रहा है। इसके रोकथामके लिए खान-पान तथा जीवन शैलीमें परिवर्तन लाना जरूरी है। लोगोंमें इस रोगके प्रति जागरूकता पैदा करनेके लिए आयोजित इस शिबिरमें १२६ पीडितोंने लाभ लिया। रक्तदान शिबिरमें गुरु गोविन्दसिंह अस्पतालके चिकित्सक समूह एवं डायाविटिज परीक्षणमें मानव सेवा ट्रस्ट जामनगरका विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। इस समग्र कार्यक्रमका संचालन श्री ५ नवतनपुरी धामके श्री सुरेन्द्र शर्मा, प्रो.दिलीपभाई आशर तथा श्री ५ नवतनपुरी धामके स्वयं सेवकके द्वारा निष्ठा एवं भाव पूर्वक हुआ।

**–संपादक**

# पक्की रसोईकी सेवा

| | | |
|---|---|---|
| ०१ ) | धा.वा. लीम्बाभाई जसाभाई पटोडीया | जामनगर |
| ०२ ) | संत श्री भजनदासजी | श्री ५ नवतनपुरी धाम |
| ०३ ) | श्री कीरीटभाई बाबुभाई पणसारा | राजकोट |
| ०४ ) | धा.वा. जीवराजभाई अर्जुनभाई लीम्बाणी | मोविया |
| ०५ ) | श्री भूपेन्द्र सिटौला तथा तुसार सिटौला | आसाम ( शुकलाई ) |
| ०६ ) | श्री शिवजीभाई करशनभाई पदमाणी | मोरबी |
| ०७ ) | श्री बावाभाई धनाभाई सखीया | खांभा |
| ०८ ) | श्री विलासभाई जोबनपुत्रा | हैदराबाद |
| ०९ ) | धा.वा. दिनेशभाई नाथाभाई वेकरीया | राजकोट |
| १० ) | श्रीमती जमनाबेन गान्डालाल वेकरीया | राजकोट |
| ११ ) | श्री गोविन्दभाई जेतसीभाई सोलंकी | केशोद |
| १२ ) | श्री रमणीकभाई मूलजीभाई दुधागरा | ध्रोल |
| १३ ) | श्री ज्योत्सनाबेन रमेशभाई बामभोलिया | राजकोट |
| १४ ) | श्री भूपेन्द्रभाई वल्लभभाई पटेल तथा नेहाबेन भूपेन्द्रभाई पटेल | बोदाल |
| १५ ) | श्री प्रभुदास पी. पटेल | मोयद |

## संपादकीय

प्रिय सुन्दरसाथजी, पाठक वर्ग, लेखक एवं विद्वद् समुदाय सर्व प्रथम आप सभीको नूतन वर्षकी ढेर सारी शुभकामनायें । ८१ वर्षसे निरन्तर हमारे जीवनमें श्रद्धा, सेवा, प्रेम, भाव एवं भक्ति आदि अनमोल पाठ पढ़ाने वाली पत्रिकाने इस अंकके साथ ही ८२ वें वर्षमें प्रवेश किया है ।

जीवनमें अध्यात्मका महत्त्व सर्वविदित है । पत्रिकाके माध्यमसे आत्माकी पहिचान और परमधामके रहस्योंको उद्घाटन होता रहा है । जिससे सुन्दरसाथ लाभान्वित होकर अपने जीवनका लक्ष्य निर्धारित करनेमें सफल रहे हैं । भविष्यमें भी यह पत्रिका हमारी मार्गदर्शिका बनी रहे । ऐसी शुभकामना ।

आनन्द बावा सेवा संस्था जामनगरमें किडनी डायालीसीस सेन्टर, आंखकी अस्पताल एवं प्राथमिक शालाके विशाल भवनकी भूमि पूजन प्रसंगमें उपस्थित जामनगरके सन्तजन एवं प्रासंगिक उद्बोधन करते हुए पूज्य आचार्य महाराजश्री ।

जामननगरमें आयोजित विश्व मंगल गौ ग्राम यात्रामें सम्बोधन करते हुए श्री सुरेन्द्रजी

## सेवा सुरभि

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका जनवरी २०१० अंकके प्रकाशनका सौजन्य मूल आमोदरा ( सा.कां ) वर्तमान **Murfreesboro (TN)U.S.A** निवासी श्री रमणभाई रायचन्दभाई पटेल द्वारा पौत्र यशके जन्मकी खुशीमें प्राप्त हुआ है। नवजात शिशु 'यश' के साथ-साथ समस्त परिवारको श्री ५ नवतनपुरी धाम तथा परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके शुभाशीर्वाद।

RNI No. GUJ BIL /2006/18311 Registration No. GJN-1 / 2009-2011

परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके जन्म दिनके दृश्य

श्री ५ नवतनपुरी धाममें नूतन वर्ष एवं परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके जन्म दिवसके उपलक्ष्यमें आयोजित रक्तदान केम्प एवं डायाबिटिज परीक्षण शिबिरके दृश्य

PRINTED BOOK

TO :

SHRI KRISHNA PRANAMI DHARMA PATRIKA
SHRI 5 NAVTANPURI DHAM JAMNAGAR - 361 001 (INDIA)